प्रस्तावित शोध–कार्य

छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी भाषा का तुलनात्मक अध्ययन

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

के कला संकायांतर्गत भाषाविज्ञान विषय में

शोध–उपाधि

के लिए प्रस्तावित

शोध–प्रबंध की रूपरेखा

सत्र 2015–16

शोधार्थी

शारदा सिंह

शोध–केंद्र

साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्‍यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी भाषा का तुलनात्मक अध्ययन

शोध–प्रबंध की रूपरेखा

शैल शर्मा

निर्देशक

डॉ. (श्रीमती) शैल शर्मा

प्रोफेसर

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय

रायपुर (छ.ग.)

शारदा सिंह

शोधार्थी

शारदा सिंह

शोध–केंद्र

साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

प्राचार्य
साहित्य एवं भाषा–अध्ययन शाला,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर, (छत्तीसगढ़)

अनुक्रमणिका

1. प्रस्तावित शोध–कार्य का शीर्षक
2. प्रस्तावना
3. प्रस्तावित क्षेत्र में पूर्व में किए गए शोध–कार्यों का पुनरावलोकन
4. शोध–कार्य का उद्‌देश्य
5. प्रस्तावित शोध–प्रविधि
6. प्रस्तावित शोध का अध्यायीकरण
7. प्रस्तावित शोध का संभावित परिणाम

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. शीर्षक : छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी भाषा का तुलनात्मक अध्ययन

2. प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ भारतवर्ष के प्रदेशों में क्षत्रफल की दृष्टि से नौवाँ सबसे बड़ा प्रदेश है। इसका कुल क्षेत्रफल 135194 वर्ग किलोमीटर है। यह तमिलनाडु, बिहार, पश्चिम बंगाल, झारखंड, असम, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा जैसे भारतीय राज्यों से क्षेत्रफल में बड़ा है तथा दक्षिण कोरिया, नीदरलैण्ड और श्रीलंका जैसे देशों से भी बड़ा है।

1 नवम्बर सन् 2000 की मध्यरात्री छत्तीसगढ़ को प्रदेश के रूप में जाना जाने लगा। 1 नवम्बर 1956 से लेकर अस्तित्व में आने के पहले तक यह मध्यप्रदेश का हिस्सा था। उसके पहले यह महाकौशल क्षेत्र में रहकर सी.पी. एंड बरार का हिस्सा था।

छत्तीसगढ़ के नामकरण को लेकर विद्वानों में मतभेद है। इसका यही कारण प्रतीत होता है कि यह सदैव से इसी नाम से नहीं जाना जाता रहा। 'छत्तीसगढ़' शब्द का अर्थ है छत्तीस गढ़ों (किलों) वाला स्थान। विक्रम संवत् 1686 में गोपालचंद्र मिश्र रचित 'खूब तमाशा' में सर्वप्रथम इसका प्रयोग हुआ है–

> ''छत्तीसगढ़ गाढ़े जहाँ बड़े गढ़ोई जानि।
> सेवा स्वामिन को रहै सकैं ऐड़ को मानि।।''

भोजपुरी भाषाई परिवार की स्तर पर एंग्लो–इंडो–आर्य भाषा है, जिसका मूल रूप से भारत की मध्य गंगा के कुछ मैदानी हिस्से में तथा नेपाल के तराई के कुछ हिस्सों में बोली जाती है।

भारत में मुख्य रूप से यह भाषा उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में, बिहार के पश्चिमी हिस्से और झारखण्ड के उत्तरी–पश्चिमी हिस्से में बाली जाती है। भोजपुरी जानने–समझने वाले लोग विश्व के कई क्षेत्रों में है। इसका कारण कि अंग्रेजी राज के दौरान उत्तर प्रदेश और बिहार से अंग्रेजों के द्वारा ले जाए गए मजदूर जिनके वंशज वहीं जाकर बस गए, जहाँ उन लोगों के पूर्वज गए थे।

ऐसे देश में सूरिनाम, गुयाना, त्रिनिदाद, टोबैगो, फिजीनीयन जैसे प्रमुख देश हैं, जहाँ भोजपुरी प्रमुख भाषा के रूप में बोली व समझी जाती है। भारत की जनगणना 2001 के अनुसार भारत में लगभग 3.3. करोड़ भोजपुरी बोलने वाले लोग हैं।

भोजपुरी भाषा 'भोजपुरिया' भाषा का नामकरण बिहार राज्य के बक्सर जिला में (पहले आरा (इलाहाबाद) में स्थित) भोजपुर नामक गाँव के नाम पर रख गया ह। भोजपुर के नाम का एक बड़ा समुदाय था, जिसमें 'नया भोजपुर' और 'पुराना भोजपुर' नाम के दो गाँव थे। मध्यकाल में यह स्थान राजपूतों के मूल निवासी भोजवंशी परमार राजा जो कि उज्जैन से आए थे, वे अपने पूर्वज राजा भोज के नाम पर उस स्थान का नाम भोजप्र रखा गया। यही भोजपुर राज्य की भाषा का नाम भोजपुरी पड़ा।

भोजपुरी भाषा पहले कैथो लिपि में लिखी जाती थी। 1894 के बाद भोजपुरी देवनागरी लिपि में लिखी जाने लगी।

छत्तीसगढ़ी भाषा और उनकी बोलियों में में कई तुलनात्मक अध्ययन हुए, जैसे– छत्तोसगढ़ी, हलबी, भतरी में अध्ययन तथा छत्तीसगढ़ी और सरगुजिया में तुलनात्मक अध्ययन, किंतु छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी अध्ययन के रूप में कोई कार्य अब तक प्रकाश में नहीं आया है। प्रस्तुत शोध–प्रबंध इसी अभाव की पूर्ति की दिशा में एक लघु प्रयास है।

3. पूर्व में किए गए शोध–कार्य का संक्षिप्त पुनरावलोकन

सर्वप्रथम भाषापरक विवेचना का सूत्रपात हीरालाल काव्योपाध्याय द्वारा रचित किंतु अप्रकाशित 'छत्तोसगढ़ी बोली का व्याकरण' से हुआ है। यह ग्रंथ आज पुनः प्रकाशन के रूप में उपलब्ध है।

जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने सभी भाषाओं, उपभाषाओं, बोलियों तथा उपबोलियों का सर्वेक्षण किया, जो 'लिंग्विस्टीक सर्वे ऑफ इंडिया' के नाम से ग्यारह बड़ी जिल्दों में सन् 1894 से 1927 में प्रकाशित हुआ। किसी भी देश की सारी भाषाओं पर एक साथ किया जाने वाला यह प्रथम कार्य था। इसमें पूर्वी हिंदी को तीन बोलियों– अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी पर क्रमबद्ध विवेचन उपलब्ध है।

सन् 1966 ई. में भालचंद्र राव तैलंग का पी–एच.डी. के लिए स्वीकृत शोध–प्रबंध 'छत्तीसगढ़ो, हलबी, भतरी का भाषावैज्ञानिक अध्ययन' के नाम से प्रकाशित हुआ, जिसमें प्रारंभ क 218 पृष्ठों तक छत्तीसगढ़ी का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से व्याकरण प्रस्तुत किया गया है।

इसी प्रकार सन् 1968 में सुखदेव सिंह ने 'भाषाविज्ञान और भोजपुरी' अध्ययन पर प्रकाश डाला है। कृपाशंकर सिंह ने सन् 1973 में 'भोजपुरी संज्ञा शब्द का घटनात्मक एवं अर्थपरक अध्ययन' किया। इसी प्रकार सन् 1996 में भारतीय ग्रंथ निकेतन द्वारा प्रकाशित रंजना के द्वारा किया गया अध्ययन 'भोजपुरी और बुंदेलखण्डी का तुलनात्मक अध्ययन' है।

4. प्रस्तावित शोध–कार्य का उद्देश्य

छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी के भाषावैज्ञानिक अध्ययन में दोनों ही भाषा में साम्य और वैषम्य को ज्ञात करना तथा दोनों ही संस्कृति में विभिन्नता और समानता का पता करना एवं दोनों भाषाओं के भाषिक–संरचना का ज्ञान होना।

5. प्रस्तावित शोध–प्रविधि

प्रस्तावित शोध–कार्य में प्राथमिक तथा द्वितीयक प्रणाली की विधि की सहायता ली जाएगी। प्राथमिक प्रणाली में भाषाओं के क्षेत्र में जाकर उन भाषा से जुड़े लोगो से साक्षात्कार लिया जाएगा एवं प्रश्नावली तथा पत्राचार पद्धति अपनाई जाएगी तथा दूसरी प्रणाली में विभिन्न ग्रंथों एवं पुस्तकों की सहायता ली जाएगी। इसके साथ–ही–साथ कार्ड–पद्धति का प्रयोग कर शब्दों का अध्ययन किया जाएगा एवं इंटरनेट की सहायता ली जाएगी।

6. प्रस्तावित शोध–कार्य का अध्यायीकरण

अध्याय प्रथम : छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी का सामान्य परिचय

1.0. प्रस्तावना

1.1. छत्तीसगढ़ी

1.2. भोजपुरी

1.3. छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी का भाषिक–क्षेत्र
1.4. संबंधित पूर्व कार्य एवं प्रस्तुत कार्य की उपादेयता
1.5. कार्य–पद्धति
1.6. कार्य की सीमाएँ एवं लक्ष्य
अध्याय द्वितीय : स्वनिम–संरचना
2.0. प्रस्तावना
2.1. खण्डीय–स्वनिम
2.2. खण्डतर–स्वनिम
अध्याय तृतीय : रूप–रचना
3.0. प्रस्तावना
3.1. रूप–रचना
3.2. व्युत्पादन–रचना
अध्याय चतुर्थ : शब्द–रचना
4.0. प्रस्तावना
4.1. मूल शब्द
4.2. मिश्र शब्द
4.3. समास शब्द
4.4. द्विरुक्ति
4.5. संकर–शब्द
4.6. मुहावरे
अध्याय पंचम : अर्थ–संरचना
5.0. प्रस्तावना
5.1. अनेकार्थी

5.2. पर्यायवाची

5.3. विलोमार्थी

5.4. समनामता

5.5. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

अध्याय षष्ठ : लोक–साहित्य

6.0. प्रस्तावना

6.1. लोक–साहित्य का वर्गीकरण

6.1.1. लोकगीत

6.1.2. लोककथा

6.1.3. लोकोक्ति

6.1.4. पहेली

अध्याय सप्तम : छत्तीसगढ़ी एवं भोजपुरी भाषा क उपबोलियों का वर्गीकरण

7.1. छत्तीसगढ़ी की बालियाँ

7.1.1. छत्तीसगढ़ी

7.1.2. खल्टाही

7.1.3. सरगुजिया

7.1.4. सदरी कोरवा

7.1.5. बैगानों

7.1.6. बिंझवारी

7.1.7. कलंगा

7.1.8. भुलिया

7.1.9. लरिया

7.2. भोजपुरी की बोलियाँ

7.2.1. आदर्श भोजपुरी

7.2.2. पश्चिमी भोजपुरी

7.2.3. मध्य भोजपुरी (मघेसी)

7.2.4. थारू

अध्याय अष्टम : तुलनात्मक संक्षिप्त शब्दकोश

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ–सूची

सूचकों की सूची (सामग्री–संकलन)

7. प्रस्तावित शोध का संभावित परिणाम

- छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी संस्कृति में विभिन्नता और समानता का ज्ञान होगा।
- छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी के भाषिक–संरचना का ज्ञान होगा।
- वैतिरिकी अध्ययन से छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी भाषा को सीखने में सहायता प्राप्त होगी।
- छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी भाषा क भाषावैज्ञानिक अध्ययन से दोनों भाषा में साम्य और वैषम्य का ज्ञान होगा।
- छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी भाषा के संरचना, लोक–साहित्य आदि विविधताओं के बारे में जानने के लिए मदद प्राप्त होगी।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. कुमार, कांति. छत्तीसगढ़ी बोली, व्याकरण और कोश. दिल्ली–6 : राधाकृष्ण प्रकशन, 1969.

2. कर, चित्तरंजन. नामविज्ञान. राजिम : विवेक प्रकाशन, 1982.

3. उपाध्याय, कृष्णदेव. भोजपुरी लोक–साहित्य का अध्ययन. 1960.

4. गुप्ता, मदनलाल. छत्तीसगढ़ी दिग्दर्शन. बिलासपुर : भारतेन्दु साहित्य समिति, 1998.

5. चंद्राकर, चंद्रकुमार. छत्तीसगढ़ी शब्दकोश. दुर्ग : श्री प्रकाशन, ए–14, आदर्श नगर, 2002.

6. तिवारी, भोलानाथ. वृहत पर्यायवाची कोश. किताब महल, 1962.

7. तिवारो, उदयनारायण. भोजपुरी भाषा और साहित्य. बिहार राजभाषा परिषद 1954.

8. तैलंग, भालचंद्र राव. छत्तीसगढ़ी, हलबी, भतरी बोलियों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन. बंबई : हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, 1966.

9. दुबे, व्यास नारायण. छत्तीसगढ़ी जनभाषा. रायपुर : पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यलय, 2004.

10. वर्मा, नरेन्द्र देव. छत्तीसगढ़ी भाषा का उद्‌विकास. इलाहाबाद : रचना प्रकाशन, 1979.

11. वर्मा, भगवान सिंह. छत्तीसगढ़ का इतिहास. भोपाल : मध्यप्रदेश हिंदी ग्रथ अकादमी, 1995.

12. सेन, सुकुमार. तुलनात्मक, पाली–प्राकृत अपभ्रंश व्याकरण. अनुवादक – महावीर प्रसाद लखेड़ा.

13. सिंह, सुखदेव. भाषाविज्ञान और भोजपुरी. दिल्ली : आदर्श साहित्य प्रकाशन, 1968.

14. सिंह, कृपाशंकर. भोजपुरी संज्ञा शब्द का घटनात्मक एवं अर्थपरक अध्ययन. जबलपुर : पी–एच.डी कार्य, 1973.

15. रंजना. भोजपुरी और बुंदेलखंड का तुलनात्मक अध्ययन. भारतीय ग्रंथ निकेतन, 1996.

16. सिन्हा, लक्ष्मण प्रसाद. रूपविज्ञान की दृष्टि से मगही और भोजपुरी का अध्ययन. अमसुकमला प्रकाशन, 2006.

17. यदु, मन्नूलाल. छत्तीसगढ़ी लोकोक्तियों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन. रायपुर : भाषिका प्रकाशन, 1979.

18. वर्मा, शकुंतला. छत्तीसगढ़ी लोक–जीवन और लोक–साहित्य का अध्ययन. इलाहाबाद : रचना प्रकाशन, 1971.

19. शुक्ल, हीरालाल. छत्तीसगढ़ ज्ञानकोश. प्रथम संस्करण 2003.

20. शुक्ल, दयाशंकर. छत्तीसगढ़ी लोक–साहित्य का अध्ययन. रायपुर : ज्योति प्रकाशन, 1969.

निर्देशक
डॉ. (श्रीमती) शैल शर्मा
प्रोफेसर
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)

शोधार्थी
शारदा सिंह